विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – सप्तम दिनांक -09 - 08 - 2021

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज सूरदास के पद नामक शीर्षक के बारे में अध्ययन करेंगे

## पिछले दिन अध्ययन किए थे आज उसके आगे -

## मैया मोरी मैं नहि माखन खायो।

मैया मोरी मैं नहि माखन खायो।

भोर भये गैयन के पाछे , मधुबन मोहि पठायो।

चार पहर बंसी लै भटक्यो , सांझ परे घर आयो।

मैं बालक बहियन को छोटो , छींका केहि बिधि पायो।

ग्वाल बाल सब बैर परे हैं , बरबस मुख लिपटायो।

तू जननी मन की अति भोरी , इनके कहे पतिआयो।

जिय तेरे कछु भेद उपजि है , जानि परायो जायो।

यह ले अपनी लकुटि कमरिया , बहुतहि नाच नचायो।

सूरदास तब बिहँसि जसोदा , लै उरकंठ लगायो।

## हिंदी भाषा में

(इस छंद में , जब गोपियों की शिकायत पर कि कृष्ण उनका मक्खन चुराकर खा जाता है , माता यशोदा बालक कृष्ण को डांटने लगती हैं तो कृष्ण अपनी सफाई पेश करते हैं। )

माता , मैंने मक्खन नहीं खाया।

सुबह सवेरे ही में गायों के पीछे जंगल में चला जाता हूँ , जंगल ही मुझे पढ़ाता है।

**चारों पहर (चौबीस घंटे) मैं बांसुरी लेकर भटकता रहता हूँ और शाम होने पर ही घर आता हूँ।**

**मैं छोटे छोटे हाथ वाला बालक हूँ में छींके (मक्खन की हाँडी जो ऊपर टांगी जाती है ) तक कैसे पहुँच सकता हूँ।**

**ये सब गाय चराने वाले बालक मेरे दुश्मन हैं , इन्होंने मेरे मुँह पर जबरदस्ती मक्खन लगा दिया है।**

**तुम मन की बहुत भोली हो माँ जो इनकी बातों में आ गयी हो।**

**अवश्य ही तुम्हारे दिल में मेरे प्रति कुछ शक पैदा हो गया है , तुम मुझे पराया समझने लगी हो।**

**यह अपनी लाठी और कमरिया ले लो , इन्होने मुझे बहुत परेशान किया है।**

**सूरदास जी (कवि) कहते है , तब यशोदा माता ने हँस कर कृष्ण को गले से लगा लिया।**